असि नदी पुनरुद्धार कार्यशाला

(गंगा बेसिन प्रबन्धन)

दिनांकः 7-6-2016, समय : 3 बजे अपराह्नः

स्थानः कुलपति लाज (कोचीन हाउस) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

अध्यक्षः प्रो. जी. सी. त्रिपाठी

कुलपतिः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

संचालनः प्रो. बी. डी. त्रिपाठी

चेयरमैन (WG): गंगा, नदी विकास एवं जल संसाधन प्रबन्धन मालवीय शोध केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

प्रस्तावना

भारत सरकार ने हाल ही में गंगा नदी के पुनरूद्धार हेतु एक महत्वपूण योजना **'नमामि गंगे'** की शुरूआत की है। परन्तु गंगा के जीर्णोद्धार के उद्देश्यों की पूर्ति तभी संभव है जब गंगा की सहायक नदियों को उनके मूल रूप में लाकर उनको गंगा से जोड़ा जाये। वाराणसी में गंगा की दो सहायक नदिया वरूणा और असि हैं। जो वाराणसी के उत्तरी एवं दक्षिणी छोर की सीमा निर्धारित करती है।

असि नदी काशी की पहचान है। पुराणों में असि नदी को दुःखों का संहार एवं पापों को नाश करने वाली माना गया है। इसीलिये काशी को मुक्ति का क्षेत्र कहा गया है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में असि नदी बड़े पैमाने पर अतिक्रमण एवं भारी अपशिष्ट के निर्वहन के कारण विलुप्त होने के कगार पर आ गयी है। जिसके कारण वाराणसी शहर के लिये एक भयंकर जल संकट ही नहीं काशी की अर्द्ध चन्द्राकार गंगा के स्वरूप को भी खतरा उत्पन्न हो गया है। अतः असि को पुनर्जीवित किये बिना काशी की पहचान एवं गंगा के स्वरूप को कायम रखना संभव नहीं है।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में 7 जून 2016 को मां गंगा की निर्मलता, अविरलता और वाराणसी शहर के गौरवशाली अतीत को बनाने रखने के लिये असि नदी के कायाकल्प की जरूरत पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने किया। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से नेशनल मिशन क्लीन गंगा के अतिरिक्त निदेशक श्री पुस्कल उपाध्याय, कानपुर आई.आई.टी. के प्रो. विनोद तारे, प्रो. सच्चिदानन्द त्रिपाठी सहित वाराणसी के नदी विशेषज्ञ, पर्यावरण वैज्ञानिक, इंजीनियर्स, चिकित्सा विशेषज्ञों, सामाजिक वैज्ञानिकों, आर्थिक विशेषज्ञों, राजनीतिज्ञों, उद्योगपतियों, धार्मिक नेताओं, इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया के साथ–साथ समाज के विभिन्न वर्गों एवं गंगासेवी जनमानस कार्यकर्ताओं ने अपनी सहभागिता की। विस्तृत विचार विमर्श के बाद निम्नलिखित प्रमुख निर्णयों पर सहमति जताई गयी–

1. असि नदी का पुनरूद्धार होना अतिआवश्यक है।
2. महामना मालवीय गंगा, नदी विकास और जल संसाधन शोध केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय इस कार्य प्रबंधन के लिए नोडल केंद्र होगा।
3. अपशिष्ट उपचार, जैविक उपचार, ठोस अपशिष्ट पदार्थों का पुर्नचक्ररण, नदी विकास, वर्षा जल संचयन और भूजल रिचार्जिंग, तालाबों के जीर्णोद्धार और अन्य रिचार्जिंग संरचनाओं, जन–जीवन सुधार से संबंधित परियोजनाओं हेतु बुनियादी पारिस्थितिक अध्ययन दीर्घकालिक और अल्पकालिक परियोजना तैयार की जायेगी।
4. सभी पायलट परियोजनाओं को संयुक्त रूप से MMRCGRDWRM और CGRBMS, आईआईटी कानपुर द्वारा नियुक्त विशेषज्ञ समिति द्वारा अनुमोदित किया जाएगा और वित्तीय सहायता के लिए NMCG को प्रेषित किया जाएगा।
5. परियोजनाओं की जांच एवं मूल्यांकन के कार्य संयुक्त रूप से MMRCGRDWRM और CGRBMS, आईआईटी कानपुर द्वारा किया जाएगा।

मुख्य वक्ता

उक्त कार्यशाला को सफल बनाने में निम्नलिखित लोगों की सहभागिता रही –

प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी, कुलपति, काहिविवि

श्री रामगोपाल मोहले, मेयर, वाराणसी

डॉ. राजेश मिश्रा, पूर्व सांसद, वाराणसी

प्रो. पी. नाग, कुलपति, MGKVP, वाराणसी

प्रो कविता शाह, निदेशक, IESD, बीएचयू

प्रो. विनोद तारे, आईआईटी, कानपुर

प्रो एस एन त्रिपाठी, आईआईटी, कानपुर

श्री राकेश मिश्रा, आईआईटी, कानपुर

प्रो. ए.के. जोशी, समाजशास्त्र विभाग, बीएचयू

श्री विजय कुमार सक्सेना, टाउन प्लानर, वीडीए

प्रो. एस के तिवारी, यूजीसी-HRDC, बीएचयू

प्रो. एन.वी.सी. राव, भूविज्ञान विभाग, बीएचयू

प्रो गोपाल नाथ, माइक्रोबायोलाजी, बीएचयू

प्रो रमेश चंद, प्लांट पैथोलाजी विभाग, बीएचयू

श्री संजय कुमार संयुक्त कुलसचिव, बीएचयू

श्री नीरज त्रिपाठी, संयुक्त कुलसचिव, बीएचयू

श्री ए.एस. पिल्लई, वीसी लाज, बीएचयू

श्री अभिषेक कुमार चौरसिया, भूविज्ञान, बीएचयू

श्री रमेश कुमार सिंह, पायनियर

श्री पुस्कल उपाध्याय, NMCG, भारत सरकार

प्रो. बीएम शुक्ला, पूर्व कुलपति, गोरखपुर वि.वि.

प्रो. बी.डी. त्रिपाठी, चेयरमैन, MRCGanga, BHU

श्री मणि शंकर पांडेय, पूर्व विधान परिषद सदस्य

श्री अशोक कुमार गुप्ता, निदेशक,बनारस बीड्स

श्री यू.एस. अग्रवाल, उद्योगपति, वाराणसी

डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, वाराणसी

प्रो राणा पी.बी. सिंह भूगोल विभाग, बीएचयू

प्रो यू. के. चौधरी, आई.आई.टी. बीएचयू

श्री प्रमोद कुमार मिश्रा, वाराणसी

श्री प्रेम प्रकाश कपूर, वाराणसी

प्रो आर, के. मल्ल IESD, बीएचयू

श्री अनूप ओझा, अमर उजाला

श्री तबस्सुम, अमर उजाला

श्री कौशल शुक्ला, दैनिक जागरण

श्री रोहित चतुर्वेदी, अमर उजाला

श्री कपिन्द्र तिवारी, संस्कृति साझा मंच

श्री एस.डी. गुप्ता, वीडीए

कार्यशाला मंथन

प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठीः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी ने कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुये कहा कि भारत सरकार 'नमामि गंगे' परियोजना में गंगा नदी के पुनरूद्धार उद्देश्यों की पूर्ति तभी संभव है जब गंगा की सहायक नदियों को भी संरक्षित किया जायेगा। प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि हमारे देश की सभ्यता एवं विकास नदियों से जुड़ा है अतः नदियों के लगातार नष्ट होते रहने से हमारी सभ्यता के नष्ट होने का खतरा बढ़ता जा रहा है। इसलिये नदियों के साथ–साथ अन्य जल स्रोतों को भी बचाये रखना होगा। इसके लिये आवश्यक है कि छोटे–छोटे समिति व समूह बनाकर जल को स्वच्छ बनाए रखने, नदियों के पुनरूद्धार से संबंधित सभी कार्यों को करना होगा। जिससे भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति दोनो को बरकरार रखा जा सके।

प्रो. बी.डी. त्रिपाठीः कार्यशाला का संचालन एवं विषय प्रवर्तन करते हुये महामना मालवीय गंगा, नदी विकास और जल संसाधन शोध केन्द्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चेयरमैन, प्रो. बी.डी. त्रिपाठी ने कहा कि वाराणसी की पहचान दो नदियां 'वरूणा' और 'असि' के नाम से होती है। गंगा की यह दो सहायक नदियां वाराणसी के उत्तरी एवं दक्षिणी छोर की सीमा निर्धारित करती है। पिछले कुछ दशकों में असि नदी पर अवैध कब्जा एवं बड़े पैमाने पर अतिक्रमण से नदी अब नाला के रूप में परिवर्तित हो गयी है। असि नदी के स्वरूप के लगातार नष्ट होते रहने के कारण काशी की अर्द्ध चन्द्राकार गंगा के स्वरूप को भी खतरा उत्पन्न हो गया है। अतः असि को पुनर्जीवित किये बिना काशी की पहचान एवं गंगा के स्वरूप को कायम रखना संभव नहीं होगा।

प्रो. विनोद तारेः कानपुर आईआईटी के प्रो. विनोद तारे ने सुझाव दिया है कि वाराणसी एक ऐसी धार्मिक नगरी है जहां लाखों लोग प्रतिदिन गंगानदी स्नान एवं मंदिरों के दर्शन हेतु आते हैं। वाराणसी के इस स्वरूप को बनाये रखना जरूरी होगा। इसके लिये वाराणसी के नाम को सम्बोधित करती दो नदियां वरूणा और असि का पुनरूद्धार होने पर ही वाराणसी के मौलिकता को बनाये रखा जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि काशी की नदियों, तालाबों एवं कुण्डों में जल की पर्याप्त मात्रा होने से ही आस–पास के क्षेत्रों को जल संकट से उबारा जा सकता है।

श्री रामगोपाल मोहलेः वाराणसी शहर के मेयर श्री रामगोपाल मोहले ने कहा कि असि नदी के पुनरूद्धार हेतु पहले भी योजनायें बनी थी परन्तु कुछ भी नहीं हो पाया था अब एक समिति गठित करके पुनः सही योजना बनाकर कार्य किया जाये तो कुछ भी असंभव नहीं है। उन्होंने असि नदीके पुनरूद्धार कार्य योजना के मूर्तरूप लेने हेतु हर संभव सहायता देने की बात कही।

श्री पुस्कल उपाध्यायः भारत सरकार के मिशन क्लीन गंगा के एडिशनल डायरेक्टर श्री पुस्कल उपाध्याय ने बताया कि जब तक असि एवं वरूणा नदीं का कायाकल्प नहीं होगा तबतक वाराणसी में गंगा को उद्धार होना संभव नहीं है। इसके लिये काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को अग्रणी भूमिका निभानी होगी जिसमें हमारा मिशन पूरी तरह से सहयोग देगा।

प्रो. पृथ्वीश नागः महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. पृथ्वीश नाग ने वाराणसी का मैप दिखाते हुये कहा कि वाराणसी के डिजिटल नक्शे उपलब्ध हैं। उसको इस्तेमाल करके एक अच्छी तकनीकी तैयार की जाये और उससे नदियों का उद्धार किया जाना चाहिये। उन्होंने असि नदी के दो धाराओं की चर्चा की जिसमें एक धारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पास से निकलने की बात कही।

श्री बी.एम. शुक्लाः गोरखपुर विश्वविद्यालय पूर्व कुलपति प्रो. बी.एम. शुक्ला ने सुझाव दिया है कि अस्सी और वरुणा नदियों का अलग–अलग उद्धार किया जाना चाहिए। उन्होंने असि नदी पर अवैध अतिक्रमण के बारे में कहा कि नव निर्माण के पहले अतिक्रमण का विद्धंश आवश्यक है।

डॉ राजेश मिश्राः वाराणसी जनपद के पूर्व सांसद डॉ राजेश मिश्रा ने कहा कि सरकार द्वारा वाराणसी में नदियों के पुनरूद्धार हेतु बहुत धन की स्वीकृति हुई है। लेकिन आजतक कोई परिणाम नहीं निकल पाया है। उन्होंने वाराणसी में अनाधिकृत निर्माणों के बारे में जोर देते हुये कहा कि इस तरह के अवैध कब्जा भी इन नदियों के पुनरूद्धार में गम्भीर समस्या है।

श्री मणिशंकर पाण्डेयः वाराणसी शहर के पूर्व एम.एल.सी. श्री मणिशंकर पाण्डेय ने अपशिष्ट जल उपचार संयंत्रों की शुरूआत और इसके लाभ के बारे में सुझाव दिया कि अपशिष्ट उपचार हेतु जापान प्रौद्योगिकी का सहयोग एक अच्छा कदम हो सकता है। उन्होंने कहा कि वाराणसी के मूल नक्शे के अनुसार जल स्रोतों का कायाकल्प किया जाय तो काशी को एक स्वच्छ शहर बनाया जा सकता है। श्री पाण्डेय जी ने सुझाव दिया है कि शिप्रा नदी के आधार पर अस्सी नदी को भी जिवंत रूप में बनाए रखा जाना चाहिए।

प्रो. राणा पी.बी. सिंहः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. राणा पी.बी. सिंह ने कहा कि प्रदूषण नियंत्रण हेतु आम लोगों को जागरूक करना नितान्त आवश्यक है। उन्होंने अपने विदेशी दौरे में गंगा के प्रति विदेशी लोगों की आस्था एवं भावना की चर्चा की। आज भी विदेशो में गंगा के प्रति जो लगाव है उसका अनुभव प्रो. पी.बी. सिंह ने सहभागियों को कराया।

प्रो. यू.के. चौधरीः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से अवकाश प्राप्त व पूर्वविभागाध्यक्ष, सिविल इंजिनियरिंग विभाग, आई.आई.टी. बी.एच.यू के प्रो. यू.के. चौधरी ने कहा कि गंगा हमारी आस्था ही नहीं बल्कि जीवन से जुड़े हर प्रश्न का उत्तर है और यदि गंगा प्रदूषित हुई या नहीं रही तो हमारा जीवन अनाथों जैसा हो जायेगा। उन्होंने गंगा को हमारे शरीर से तुलना करते हुये कहा कि हमारे विभिन्न अंगों की बीमारी में जिस तरह से डॉक्टर उसे जांच करता है और ठीक करता है उसी तरह से बीमार गंगा के प्रति लोगों को जागरूक होना पड़ेगा।

प्रो. ए.के. जोशीः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान के प्रोफेसर एके जोशी ने कहा कि अस्सी नदी के दोनों किनारों पर लगभग 37000 अवैध निर्माण हैं। इनकों वीडीए के समर्थन के साथ हटाया जाना चाहिए। उसके लिए वाराणसी के प्रख्यात लोगों के साथ एक कमेटी का गठन किया जाना चाहिए।

प्रो. रमेश कुमारः काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान इंस्टीट्यूट के प्रोफेसर रमेश कुमार ने सुझाव दिया कि वाराणसी के नालों एवं सीवेज को साफ करना एवं उनका उचित रख–रखाव किया जाना चाहिए।

श्री कामेश्वर उपाध्यायः प्रख्यात ज्योतिषी श्री कामेश्वर उपाध्याय ने गंगा में वरुणा और अस्सी नदियों के संगम के बारे में जोर देते हुये कहा कि इनके संगम स्थल को स्वच्छ करके इसके सुन्दरीकरण किया जाय। गंगा–असि संगम में स्नान से हजारों वर्षों के पापों मुक्ति मिलती है।

श्री अशोक कुमार गुप्ताः बनारस बीड्स के अध्यक्ष एवं प्रमुख उद्योगपति श्री अशोक कुमार गुप्ता ने सुझाव दिया है कि गंगा से एक नहर न्यूनतम 30 फुट चौड़ाई के साथ कंदवा तक बनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वाराणसी प्रशासन द्वारा अस्सी नदी के किनारे पर अवैधरूप से रहने वाले लोगों को पीला कार्ड जारी किया गया है। यह विशेष अनुमति याचिका के आधार पर लोगों के समर्थन के साथ इसे रद्द कर दिया जाना चाहिए और अस्सी नदी का पुनरूद्धार होना चाहिये।

श्री यू.एस. अग्रवालः प्रसिद्ध उद्योगपति एवं वाराणसी हीरो के निदेशक श्री यू.एस. अग्रवाल जी ने कहा कि वाराणसी में लोगों को जागरूक करना एवं वर्षा जल संग्रहण परियोजना को जोर–शोर के चलाया जाना चाहिये। इसका लाभ भी वाराणसी के जनता को ही मिलेगा।

डा. एस.के. तिवारीः भूगर्भ विज्ञान विभाग के डा. एस.के. तिवारी ने बताया कि असि नदी पर जहां–जहा कोई अतिक्रमण नहीं है सबसे पहले वहां की स्थिति में सुधार लाया जाय बाद में अन्य जगहों के कायाकल्प के बारे में कार्य किया जाय। नदी के पुराने नक्शे के अनुसार पुनः उसकी मैपिंग की जानी चाहिये।

श्री कौशल शुक्लाः दैनिक जागरण के संवाददाता श्री कौशल शुक्ला ने वाराणसी के इतिहास पर प्रकाश डाला। और कहा कि सामुदायिक अपशिष्ट जल संयंत्र लगाकर मल–जल का शोधन किया जाना चाहिये।

श्री कपिन्द्र तिवारीः वाराणसी के सांस्कृतिक साझा मंच के प्रमुख श्री कपिन्द्र तिवारी ने सुझाव दिया कि सभी नालों एवं तालाबों की सफाई के साथ–साथ उसके पानी की गुणवत्ता को भी बनाये रखना होगा।

प्रो. कविता शाहः आई.इ.एस.डी., काशी हिन्दू विश्वविद्याल के डायरेक्टर प्रो. कविता साह ने कार्यशाला के समापन में सभा में उपस्थित सभी लोगों को धन्यवाद ज्ञापन किया।

वाराणसी | शनिवार | 4 जून 2016

अमर उजाला वाराणसी

असि के उद्धार को आगे आया बीएचयू

गंगा की सहायक नदी को पुनर्जीवित करने के लिए होगा काम

अनूप ओझा

वाराणसी। काशी में दम तोड़ने के कगार पर पहुंची मोक्षदायिनी असि नदी पुनर्जीवित करने की योजना जल्द तैयार की जाएगी। इस भगीरथ प्रयास के लिए महामना की तपस्थली बीएचयू ने कदम आगे बढ़ाया है। असि के बंद चैनलों को खोलने के साथ ही असि-गंगा संगम को नए सिरे से बहाल कराने की पहल की जाएगी। इस योजना को सतह पर लाने के लिए बीएचयू में नदी विशेषज्ञों, इंजीनियरों और पर्यावरणविदों की पहली बैठक सात जून को होगी।

बीएचयू ने माना है कि असि के बिना काशी का न तो पर्यावरण सुधरेगा और न भूगर्भीय जल के प्रबंधन की व्यवस्था ही सुदृढ़ रह पाएगी। गिरते भूजल स्तर और बिगड़ते वातावरण को इसी चिंता से जोड़कर देखा जा रहा है। इसके अलावा असि नदी के बर्बाद होने से काशी के आध्यात्मिक स्वरूप और महत्व पर असर पड़ना स्वाभाविक है। इन गंभीर दुष्परिणामों को देखते हुए बीएचयू ने असि नदी के पुनरुद्धार की योजना बनाने का निर्णय किया है। इसके लिए केंद्रीय गंगा पुनरुद्धार मंत्रालय से भी बात की जाएगी। कुलपति प्रो. जीसी त्रिपाठी ने गंगा पर शोध और अध्ययन के लिए हाल ही में मालवीय गंगा नदी विकास एवं जल संसाधन प्रबंधन शोध केंद्र के चेयरमैन प्रो. बीडी त्रिपाठी को जिम्मेदारी सौंपी है। प्रो. त्रिपाठी ने जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अलावा केंद्रीय जल आयोग के विशेषज्ञों से असि नदी के चैनलों को चिह्नित करने के लिए संपर्क साधा है। सात जून को असि के पुनरुद्धार पर होने वाली मिशन क्लीन गंगा के निदेशक के अलावा आईआईटी रुड़की के प्रो. विनोद तारे समेत देश के कई नामचीन विशेषज्ञ हिस्सा लेंगे। इसमें आठ किलोमीटर लंबी असि नदी को रिचार्ज करने की कवायद पर मंथन किया जाएगा, ताकि योजना को अमली जामा पहनाया जा सके।

मुद्दा वाराणसी की विरासत का

- बीएचयू में सात जून को होगी नदी विशेषज्ञों और पर्यावरणविदों की बैठक

अहम बैठक में असि नदी को पुनर्जीवित करने की योजना पर बीएचयू काम करेगा। इसके लिए तैयारी कर ली गई है। नदी के चैनल की पहचान करने के लिए विशेषज्ञों की मदद ली जाएगी, ताकि उसे मूल रूप में लाया जा सके। असि को बचाए बिना काशी की पहचान को कायम रख पाना संभव नहीं होगा।
- प्रो. बीडी त्रिपाठी।

नाले में तब्दील हो चुकी है असि

असि नदी काशी की अस्मिता और पहचान की द्योतक है। वरुणा और असि को मिलाकर ही इस शहर का नाम वाराणसी पड़ा लेकिन बीते दो दशक में शहर के नालों को इस नदी में मिलाकर और कूड़े-कचरे से पाटकर नाले में तब्दील कर दिया गया है। कई जगहों पर इसके चैनल बंद कर दिए गए हैं। असि-गंगा संगम को पाटकर इसकी धारा नगवा नाले में मिला दी गई है। नदी की रक्षा के लिए साझा संस्कृति मंच और असि नदी मुक्ति आंदोलन के बैनर तले सामाजिक कार्यकर्ता संघर्ष कर रहे हैं।

वर्ष 45 अंक 206
पृष्ठ 24
वाराणसी, बुधवार
8 जून 2016
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 3.00

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

गृह मंत्रालय को जानकारी देने को बाध्य नहीं : केजरी 16 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' की प्रगति में खराबी पर डीएम होंगे जवाबदेह

www.jagran.com
उत्तर प्रदेश • दिल्ली • मध्य प्रदेश • हरियाणा • उत्तराखण्ड • बिहार • झारखंड • पंजाब • जम्मू-कश्मीर • हिमाचल प्रदेश • पश्चिम बंगाल से प्रकाशित

असि का उद्धार करना है तो हटाना पड़ेगा अतिक्रमण

- बीएचयू में कुलपति की अध्यक्षता में नदियों के संरक्षण व संवर्धन पर हुआ मंथन
- वक्ताओं ने कहा, वोट की राजनीति छोड़ें, अतिक्रमण करने वालों का रद करें पीला कार्ड

जागरण संवाददाता, वाराणसी : मेयर साहब, काशी की पहचान वरुणा व असि नदी से है। ऐसे में यदि असि का उद्धार करना है तो वोट बैंक की राजनीति छोड़ना होगा। नगर निगम असि नदी से तत्काल अतिक्रमण हटवाए। अतिक्रमण करने वाले आवासों का पीला कार्ड रद किया जाए। संभव हो तो उन आवासों का बिजली-पानी का भी कनेक्शन कटवाएं। कुछ ऐसी ही बातें वक्ताओं ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति आवास पर मंगलवार को 'नदियों के संरक्षण, संवर्धन, अविरलता व स्वच्छता' को लेकर हुई बैठक में कहीं। कुलपति प्रो. गिरीश चंद्र त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुई बैठक में विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, समाजसेवियों ने काशी की शान वरुणा व असि नदी को पुनर्जीवित करने को लेकर अपने-अपने विचार रखे। गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. बीएम शुक्ला ने कहा कि सृजन के लिए विध्वंस करना ही पड़ता है। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के कुलपति डा. पृथ्वीश नाग ने कहा कि नदियों को नहरों से जोड़ने के लिए सबसे अच्छी तकनीक नार्वे के पास है। बीएचयू व नार्वे के बीच करार भी हुआ है। ऐसे में बीएचयू के लिए नार्वे से ऐसी तकनीकी हासिल करना काफी आसान होगा। इस दौरान आइआइटी, कानपुर के प्रो. विनोद तारे ने कहा कि असि नदी पर अतिक्रमण हटाकर जल प्रवाह बनाना होगा। इसके लिए आधुनिक तकनीक व पुरानी सोच को मिलाकर काम करना होगा। पूर्व सांसद डा. राजेश मिश्रा ने कहा कि सिर्फ प्लान बनाने, बैठकें करने, समिति बनाने से काम नहीं चलेगा। रिजल्ट के लिए धरातल पर काम करने की जरूरत है।

बीएचयू के कुलपति आवास पर आयोजित बैठक में बोलते प्रो. विनोद तारे।

उद्गम स्थल को गंगा से जोड़ने के लिए बने नहर

प्रो. अरविंद जोशी ने कहा कि असि नदी के उद्गम स्थल कंदवा को गंगा से जोड़ने के लिए नहर बनाई जानी चाहिए। असि नदी के उद्भव पर विशेष कार्य करने की आवश्यकता है। जब तक बेहतर तरीके से शुरुआत नहीं होगी, तब तक नदी का भला नहीं हो सकता। आइआइए के चेयरमैन व समाजसेवी आरके चौधरी ने कहा कि अब वरुणा नदी जीवंत हो रही है। हालांकि असि को अतिक्रमण मुक्त करना मुश्किल है। अन्य वक्ताओं ने कहा कि नदियों का संगम रोकना अपराध है। अशोक गुप्ता ने कहा कि गंगा से नहर निकालकर कंदवा तक ले जाना होगा, ताकि असि की धारा तेज हो सके।

इनकी रही सक्रिय भागीदारी

बैठक में महापौर रामगोपाल मोहले, पूर्व एमएलसी मणि शंकर पांडेय, प्रमोद कुमार मिश्रा, प्रो. एके जोशी, कामेश्वर उपाध्याय, रमेश सिंह, प्रो. यूके चौधरी, प्रो. राणा पीबी सिंह सहित अन्य लोगों ने विचार व्यक्त किया। संचालन प्रो. बीडी त्रिपाठी व धन्यवाद ज्ञापन बीएचयू की पर्यावरण व धारणीय विकास संस्थान की प्रो. कविता शाह ने किया।

अमर उजाला वाराणसी | वाराणसी | बुधवार | 8 जून 2016

गर असि नदी को पुनर्जीवित करना है तो

रुकावटें हटाएं, नदी को प्रवाहमान बनाएं

असि के उद्गम स्थल कंदवा को गंगा से जोड़ने के लिए बने नहर

वाराणसी नदी विशेषज्ञों का मानना है कि असि नदी को यदि पुनर्जीवित करना है तो उसके रास्ते में आने वाली सभी रुकावटों को दूर करना होगा। नदी के रास्ते में आने वाले निर्माणों को हटाना होगा। उसमें मिलने वाले सीवर को बंद करना होगा। साथ ही नदी के उद्गम स्थल (कंदवा) तक गंगा का जल नहर के जरिए पहुंचाना होगा। इसके लिए चरणबद्ध तरीके से कार्ययोजना बनानी होगी। नदी विशेषज्ञों ने यह विचार मंगलवार अपराह्न काशी हिंदू विश्वविद्यालय की पहल पर आयोजित बैठक में व्यक्त किए।

बीएचयू में मंथन

बीएचयू में आयोजित बैठक को संबोधित करते प्रो. विनोद तारे (बाएं)। बैठक में शामिल विशिष्टजन।

वाराणसी (ब्यूरो)। बीएचयू के कुलपति प्रो. जीसी त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में गोरखपुर विवि के पूर्व कुलपति प्रो. बीएम शुक्ला ने कहा कि सृजन के लिए विध्वंस करना ही पड़ता है। असि नदी को दोबारा सृजित करने के लिए नदी के रास्ते में आने वाली हर चीज को हटाना होगा।

चाहे वह बड़ी-बड़ी रिहायशी इमारतें ही क्यों न हों। इस काम में भूगोल और इतिहास के जानकारों की राय भी जरूरी है। वहीं काशी विद्यापीठ के कुलपति डॉ. पृथ्वीश नाग ने कहा कि नदियों को नहरों से जोड़ने की सबसे उम्दा तकनीक नार्वे के पास है। हाल ही में बीएचयू का नार्वे से करार हुआ है। बीएचयू को नार्वे ऐसी तकनीक सुझा सकता है, जिससे असि को दोबारा जीवन दिया जा सके। समाजसेवी आरके चौधरी और यूएस अग्रवाल ने कहा कि असि नदी को पुनर्जीवित करने के लिए विस्तृत कार्ययोजना की जरूरत है। विशेषज्ञों की एक टीम बने और कमेटी के सुझावों पर काशी की जनता की मुहर लगे। उद्यमी अशोक गुप्ता ने कहा कि अनियोजित तरीके से असि नदी के किनारे बसे लोगों को नगर निगम की ओर से जारी पीला कार्ड निरस्त होना चाहिए। वरुणा नदी को लेकर सरकार जो तेजी दिखा रही है, वैसी ही तेजी असि को लेकर भी दिखनी चाहिए। पूर्व एमएलसी मणिशंकर पांडेय ने असि को पुनर्जीवित करने के लिए शिप्रा नदी के पुनर्जीवन मॉडल को अपनाने का सुझाव दिया। बैठक में पूर्व सांसद डॉ. राजेश मिश्र, प्रो. एके जोशी, कामेश्वर उपाध्याय, रमेश सिंह, कौशल किशोर, प्रो. यूके चौधरी, प्रो. राणा पीवी सिंह ने भी सुझाव दिए। संचालन प्रो. बीडी त्रिपाठी व धन्यवाद ज्ञापन प्रो. कविता शाह ने दिया।

> असि नदी काशी के जनमानस का भाव है। यह नदी इस शहर की पहचान है। इस पहचान को मिटने से बचाने के लिए समाज के हर वर्ग के लोगों का समर्थन जरूरी है। विशेषज्ञों की राय से ही कार्ययोजना बनेगी। कार्ययोजना को मूर्त रूप देने के लिए जनता से भी सुझाव लिए जाएंगे। सबकी सहमति से नदी को पुनर्जीवित करने का काम होगा। - रामगोपाल मोहले, महापौर

मुद्दा वाराणसी की विरासत का

बहुत लोग मिलकर थोड़ा-थोड़ा काम करें : प्रो. जीसी त्रिपाठी

बीएचयू के कुलपति प्रो. जीसी त्रिपाठी ने कहा कि असि नदी को बचाने के लिए बहुत लोगों को मिलकर थोड़ा-थोड़ा काम करने की जरूरत है। नदी विशेषज्ञ, इतिहासकार, वैज्ञानिक, राजनेता, संस्कृतिकर्मी, भूगोलविद् एवं आमजन सभी को एक मंच पर आना होगा। नदियां और सभ्यता एक साथ चली हैं। हर बड़ा शहर किसी नदी के किनारे ही बसा है। दुर्भाग्य से देश में अब तक 400 से अधिक नदियां लुप्त हो चुकी हैं। असि का मुद्दा आमजन का मुद्दा बनेगा, तभी सारी कार्ययोजनाएं मूर्त रूप ले पाएंगी। काशी के लोगों का असि नदी से भावनात्मक रिश्ता है। उस रिश्ते की तासीर में गर्माहट लाने से ही तस्वीर बदल जाएगी।

असि-गंगा के संगम से ही बनेगी बात: प्रो. विनोद तारे

गंगा बेसिन प्रबंधन का काम देख रहे नदी विशेषज्ञ कानपुर आईआईटी के प्रो. विनोद तारे ने कहा कि असि का अस्तित्व तभी बचेगा जब गंगा से इसका संगम होगा। असि नाले में तब्दील हो चुकी है। इसे बचाने के लिए इसमें गिरने वाले सीवर को तत्काल रोकना होगा। इसे प्रवाहमान बनाने के लिए उसके रास्ते में पड़ने वाले तालाबों और कुंडों को इससे जोड़ना होगा। भूजल स्तर को ऊंचा उठाने के लिए जरूरी है कि रेन वाटर हार्वेस्टिंग को कड़ाई से लागू किया जाय। उद्गम स्थल से ही नदी में स्वच्छ जल डाला जाए। नदी के नैसर्गिक बहाव के लिए सरफेस वाटर और ग्राउंड वाटर का जुड़ाव जरूरी है।